वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशिया की प्रगतिशील भूमिका

वक्ता - क्रिस्टीन लगार्ड, अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की प्रबन्ध निदेशक
[Christine Lagarde, Managing Director, International Monetary Fund]
नई दिल्ली, भारत, 12 मार्च 2016

सुप्रभात। प्रगतिशील एशिया के बारे में इस ऐतिहासिक सम्मेलन की सह-मेजबानी करने के लिए भारत में पुन: आने पर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं प्रधानमंत्री मोदी, वित्त मंत्री जेटली, तथा गवर्नर राजन को इस संयुक्त पहल के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद देती हूं।

भारत और आई.एम.एफ. का सम्बन्ध बहुत पुराना है – वास्तव में, भारत 70 वर्ष पूर्व आई.एम.एफ. का एक संस्थापक सदस्य था। हमारी भागीदारी उसी समय से लगातार सुदृढ़ होती आई है।

भारत, एशिया और विश्व

भारत में हमारी मुलाकात का यह एक बिलकुल उपयुक्त समय है: भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती हुई विशाल अर्थव्यवस्था है; भारत अपने विशालतम एवं सबसे युवा कार्यदल तैयार होने की कगार पर खड़ा है; तथा एक दशक के समय में दुनिया का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश बनने जा रहा है।

इस प्रकार, कायापलट के एक अभूतपूर्व अवसर के साथ – भारत अपने इतिहास में एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। भारत में महत्वपूर्ण सुधार किए जा रहे हैं। जैसे कि – *मेक-इन-इंडिया* तथा *डिजिटल इंडिया*। तथा और भी अधिक सुधारों के वादे के साथ भारत का भविष्य बहुत उज्जवल प्रतीत हो रहा है।

लगभग दस दिनों में - भारत, नेपाल व बहुत से अन्य देश - होली (रंगों का उत्सव) के त्यौहार का समारोह कर रहे होंगे, जो कि बसंत ऋतु के आगमन का संदेश देता है। मैं ऐसा सुझाव नहीं दे रही कि होली की परम्परा के अनुसार हम सभी एक दूसरे को रंगों या पानी से सराबोर करें (इसे हम बच्चों के लिए छोड़ देते हैं)। परन्तु मेरे विचार में हमें भारत की उपलब्धियों – तथा एशिया की उपलब्धियों का जश्न मनाना चाहिए।

एशिया के पास गर्व करने के लिए बहुत कुछ है। यह विश्व का सबसे सक्रिय क्षेत्र है तथा आज वैश्विक अर्थव्यवस्था में 40 प्रतिशत योगदान एशिया का है। अगले चार वर्षों में – इस गति में मामूली कमी के बावजूद भी – एशिया वैश्विक वृद्धि में लगभग दो-तिहाई योगदान करने की स्थिति में होगा।

इस महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका को ध्यान में रखते हुए एशिया की सक्रिय गतिशीलता का अनुकूलतम उपायेग किया जाना - समस्त विश्व के एक गम्भीर हित का विषय है।

यह क्षेत्र किस प्रकार से अनुकूल स्थितियों को अपनी आधारशिला बना सकता है? यह आज की वैश्विक आर्थिक चुनौतियों का किस प्रकार से सामना कर सकता है? और सबसे प्रमुख बात - यह अपनी भविष्य की क्षमताओं को मूर्त रूप देने के लिए क्या कर सकता है?

I. हाल फिलहाल की अनुकूल स्थितियों को आधारशिला बनाना

वैश्विक अर्थव्यवस्था में एशिया का द्रुत समेकन - पिछली पीढ़ी के सबसे असाधारण वैश्विक विकास में एक रहा है। सापेक्षिक रूप से इस कम समय में, इस विशाल एवं विविध क्षेत्र ने आर्थिक 'चमत्कार' किए हैं, तथा इस क्षेत्र के बहुत से देश - वैश्विक अर्थव्यवस्था के एक मजबूत स्तंभ बन गए हैं।

पिछले 25 वर्षों के दौरान – एशियाई संकट के बावजूद भी – इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था लगभग 6 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि करती रही है। हाल के वैश्विक वित्तीय संकट के बावजूद भी एशिया एक बेहतर स्थिति में था।

इस आर्थिक कायापलट ने सामाजिक विकास का समर्थन किया है। यह क्षेत्र पिछले 35 वर्षों के दौरान निर्धनता घटाने के मामले में विश्व में सबसे आगे रहा है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य परिणामों में महत्वपूर्ण रूप से सुधार आए हैं। लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया है।

एशिया - नवप्रवर्तन का पर्यायवाची भी बन गया है। प्रत्येक दिन, विश्व के लगभग प्रत्येक हिस्से में एशियाई प्रौद्योगिकी लोगों के जीवन में एक अभिन्न योगदान करती है। एशियाई प्रौद्योगिकी की बात करने पर हमारे मस्तिष्क में तुरन्त ही कारें, स्मार्टफोन तथा टेलीविजन की बात आती है – लेकिन जैवप्रौद्योगिकी, वाणिज्यिक सैटेलाइट तथा नवीकरणीय ऊर्जा के बारे में भी सोचें।

इस बढ़ी हुई परस्पर सम्बद्धता का अर्थ है कि अब विश्व पर एशिया का प्रभाव पहले से कहीं बहुत अधिक है; और इसी प्रकार एशिया पर भी वैश्विक आर्थिक विकासों का पहले से कहीं अधिक गहरा प्रभाव पड़ता है - और उसके अनुरूप प्रतिक्रिया करना भी आवश्यक होता है।

II. वैश्विक आर्थिक चुनौतियां तथा एशिया की प्रतिक्रिया

वास्तव में आज वैश्विक अर्थव्यवस्था के समक्ष बहुत ही चुनौतियां हैं: तीव्र उतार-चढ़ाव वाले बाजार तथा पूंजी प्रवाह; बहुत से देशों में आर्थिक संक्रमण तथा वित्तीय सीमितताएं; कमोडिटी समेत तेल के मूल्यों में भारी गिरावट; तथा बढ़ते हुए भौगोलिक-राजनीतिक तनाव।

एशिया की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए? कार्रवाई की आवश्यकता वाले कुछ प्रमुख क्षेत्र सुस्पष्ट हैं:

- सहायक मौद्रिक नीति – मूल्य एवं बाह्य स्थिरता उद्देश्यों के अनुरूप;
- विकास के अनुकूल वित्तीय उपाय; तथा,
- वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्तर वाले विवेकपूर्ण उपाय।

निश्चित रूप से, प्रत्येक देश एवं उसकी परिस्थितियों के अनुसार भिन्न नीति की आवश्यकता होती है। वैसे लगभग सभी मामलों में सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि ढांचागत विकास के लिए - प्रतिस्पर्धात्मकता, विकास एवं नौकरी - तीन प्रमुख क्षेत्र हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

- चीन में: ऋण-आधारित निवेश पर निर्भरता कम करके अर्थव्यवस्था के पुनर्संतुलन में सहायता के लिए ऋण आवंटन में सुधार करना।

- जापान में: द्वि श्रम बाजार में सुधार करना, उत्पाद बाजार को स्वतंत्र करना, तथा कॉरपोरेट गवर्नेन्स में सुधार करना।

- भारत में: उत्पाद बाजारों की कुशलता को बेहतर बनाना, निजी निवेश को प्रोत्साहित करना तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार करना।

- उभरते हुए बाजारों से लेकर निम्न आय वाले राष्ट्रों तक बहुत से देशों में – व्यवसाय परिवेश को सुदृढ़ बनाना तथा बॉन्ड बाजारों को विकसित करना।

इस प्रकार की ढांचागत समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान करने से एशिया की अल्प-कालिक एवं मध्यम-कालिक संभावनाओं को बेहतर बनाने में सहायता करने के साथ ही साथ इस क्षेत्र की भविष्य की रोमांचक संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करने वाली नींव की सुरक्षा भी होगी।

III. एशिया की संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त करना

भारत में नोबल पुरस्कार विजेता रबीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है *"आप समुद्र के किनारे खड़े होकर केवल पानी को देखते रहने के द्वारा समुद्र को पार नहीं कर सकते हैं।"* एशिया ने इससे कहीं बहुत अधिक किया है! और अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है।

समग्र तौर पर इस पूरे क्षेत्र में वर्ष 1990 के पश्चात आय असमानता की स्थिति और भी खराब हुई है। आई.एम.एफ. के एक नए कर्मचारी पत्र में पाया गया है कि 22 में से 15 एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में आय असमानता में वृद्धि हुई है। विश्व के दो तिहाई निर्धन लोग एशिया में रहते हैं, और उनमें से बहुत से लोग भारत में हैं। अधिकांश क्षेत्र में, श्रम बाजार में महिलाओं एवं युवाओं बहुत ही कम सहभागिता है।

वैसे एक अन्य दृष्टिकोण से देखने पर इन चिंताओं को - अवसर में बदला जा सकता है।

यदि आय असमानता को दूर किया जा सके, निर्धनता को कम किया जा सके, तथा महिलाओं एवं युवाओं को आर्थिक रूप से सशक्त किया जा सके, तो क्या होगा? यदि विकास को और अधिक समावेशी व संवहनीय बनाया जा सके, तो क्या होगा? यदि एशिया के 4.4 अरब लोग अपनी पूर्ण क्षमताओं को मूर्त रूप दे सकें, तो क्या होगा?

हम संभावनाओं की कल्पना कर सकते हैं। प्रश्न यह है कि हम उन्हें मूर्त रूप कैसे दे सकते हैं:

सर्वप्रथम, स्वास्थ्य एवं वित्त जैसी सेवाओं की उपलब्धता में विस्तार करना अति आवश्यक है। उदाहरण के लिए, भारत ने वर्ष 2018 तक बैंकिंग सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच का लक्ष्य बनाया है। अगस्त 2104 से लेकर अब तक *प्रधानमंत्री जन-धन योजना* के माध्यम से 21 करोड़ से अधिक लोग - जिनके पास पहले कोई बैंक खाता नहीं था - को एक बैंक खाता प्रदान किया जा चुका है, जिसमें सामाजिक अंतरणों का सीधे भुगतान किया जाता है।

दूसरे क्रम पर, राज्य-वित्त नीति के प्रभाव का अधिकतमीकरण किया जाना आवश्यक है। इसका अर्थ है - सामाजिक व्यय को सबसे अधिक जरूरतमंद वर्ग पर लक्षित किया जाना। उदाहरण के लिए फिलीपीन्स जैसे देशों ने सशर्त नकद अंतरण कार्यक्रमों का आरम्भ किया है। प्रभावी पुनर्वितरण का अर्थ - महंगी चतुर्दिक अनुवृत्तियों से बचना, तथा करों को और अधिक पगतिशील बनाना भी है। *आधार* प्रणाली के साथ, भारत ने लक्षित अनुवृत्ति (टारगेटेड सब्सिडी) प्रदान करने का अभूतपूर्व तरीका प्रस्तुत किया है। लगभग 1 अरब लोगों के पास *आधार* कार्ड हैं, तथा - महिलाओं समेत सभी जरूरतमंद लोगों को - भुगतान एवं अन्य सेवाएं प्रदान करने हेतु इसके उपयोग की अनंत संभावनाएं हैं।

यह बात मुझे अपने तीसरे बिन्दु पर ले आती है: महिलाओं का सशक्तीकरण आवश्यक है – चाहे उच्च स्तरीय शिक्षा तक महिलाओं की पहुंच को बेहतर बनाने के द्वारा, आर्थिक सहभागिता के मार्ग में विधिक एवं लॉजिस्टिकल बाधाओं को समाप्त करने के द्वारा, या फिर महिलाओं के लिए नौकरी व परिवार के संयोजन को और अधिक व्यावहारिक बनाने के द्वारा। उदाहरण के लिए प्रधानमंत्री मोदी की सरकार की एक पहल *बेटी-बचाओ बेटी-पढ़ाओ* का उद्देश्य महिला कल्याण सेवाओं को बेहतर बनाना है। श्रम बाजार में द्विविधता तथा अनौपचारिकता का समाधान करने से और अधिक युवा लोग औपचारिक कार्यों में आगे आएंगे, जो कि बढ़ती हुई आयु वाली जनसंख्या वाले देशों में एक विशेष रूप से स्वागतपूर्ण बढ़ावा प्रदान करेंगे।

चौथे क्रम पर, एशिया में 80 करोड़ लोगों के पास जल, स्वच्छता एवं बिजली की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए, समावेशी विकास का अर्थ है - इन्फ्रास्ट्रक्चर में और अधिक निवेश करना तथा निवेश को और उस अधिक कार्यकुशल बनाना।

पांचवे क्रम पर, और भी अधिक व्यापार-एकीकरण - और अधिक संवहनीय वृद्धि का समर्थन कर सकता हे, विशेष तौर पर भारत तथा दक्षिण एशिया में अन्य देशों के लिए। बहुपक्षीय व्यापार उदारीकरण में वैश्विक कल्याण को बेहतर बनाने की सम्भावना है। वैसे, यदि इस स्तर पर प्रगति मंद रहती है तो व्यापक क्षेत्रीय व्यापार अनुबंध - टैरिफ एवं गेर-टैरिफ बाधाओं को कम करने में तथा नए क्षेत्रों, जैसे कि सेवाओं, को सम्मिलित करने में सहायता कर सकते हैं।

अंत में, हमारे समक्ष जलवायु परिवर्तन की चुनौती है। पिछले दिसम्बर में, ऐतिहासिक पेरिस अनुबंध के संदर्भ में 186 देशों ने अल्पीकरण प्रतिज्ञा सबमिट की है। अब उन्हें अपना वचन अवश्य निभाना होगा, जिसमें कार्बन मूल्य-निर्धारण से लेकर ऊर्जा सुधार तक शामिल है। स्पष्ट रूप से, इस प्रयास में एशिया की एक बहुत बड़ी हिस्सेदारी है।

हां, निश्चित रूप से ये चुनौतियां बहुत ही विकट हैं, और हां मुझे पूर्ण विश्वास है कि एशिया इन चुनौतियों पर विजय प्राप्त कर सकता है। मैं कई बार एशिया आई हूं, और मैं यहां के लोगों की जीवंतता, ऊर्जा, तथा कुछ भी कर सकने की अदम्य इच्छा शक्ति देखकर हमेशा ही आश्चर्यकित रही हूं।

उन्होंने विश्व को दिखाया है कि एशिया क्या हासिल कर सकता है – और वे विश्व को पुन: दिखाएंगे।

एशिया एवं आई.एम.एफ.

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि इस प्रयास में आई.एम.एफ. - एशिया का भागीदार है, तथा इस क्षेत्र की तेजी से बढ़ती हुई महत्वपूर्ण भूमिका - हमारे सम्बन्ध में प्रतिबिम्बित होती है।

इस वर्ष के आरम्भ में, कोटा एवं प्रशासनिक सुधार प्रभावी बने, जिससे हमारे 188 सदस्य देशों में से उभरती हुई एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के प्रतिनिधित्व में सुधार आया है। इसका एक परिणाम यह है कि भारत अब आई.एम.एफ. के शीर्ष दस हितधारकों में चीन और जापान के समकक्ष आ गया है।

साथ ही, पिछले वर्ष के अंत में आई.एम.एफ. के एस.डी.आर. मुद्रा समूह में द्वितीय एशियाई मुद्रा के रूप में रेन्मिन्बी को शामिल करने का निर्णय किया गया – इसमें जापानी येन पहले से ही मौजूद है।

हमारी भागीदारी में एक अन्य कीर्तिमान यह है कि - वर्ष 2018 में इंडोनेशिया - आई.एम.एफ. वार्षिक बैठक की मेजबानी करेगा।

मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि आई.एम.एफ. यहां नई दिल्ली में दक्षिण एशिया के लिए एक नया क्षेत्रीय प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहायता केन्द्र खोल रहा है। हमारे लिए यह प्रथम पूर्णतया समेकित केन्द्र होगा तथा हमारे भविष्य के क्षमता विकास कार्य के लिए एक प्रतिमान होगा। केन्द्र की मेजबानी का प्रस्ताव करने तथा पर्याप्त वित्तीय प्रतिबद्धता के लिए मैं भारत सरकार को तहे दिल से धन्यवाद देती हूं। इस रोमांचक पहल को सफल बनाने के लिए भारत, आई.एम.एफ. तथा अन्य बाह्य भागीदारी जैसे कि ऑस्ट्रेलिया तथा कोरिया गणराज्य - के साथ जुड़ने के लिए मैं अन्य सदस्य देशों - बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, तथा श्रीलंका - को भी धन्यवाद देना चाहूंगी।

निष्कर्ष: एशिया का वैश्विक नेतृत्व

महात्मा गांधी ने कहा था *"हम अपने वर्तमान में अपने भविष्य का निर्माण करते हैं।"*

इस क्षेत्र की सक्रिय गतिशीलता - भविष्य के लिए अभी निवेश करने, तथा एशिया में आगे बढ़ने - का एक ऐतिहासिक अवसर प्रदान करती है।

ऐसा करना न केवल एशिया को संतत् विकास के मार्ग पर ले जाएगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख योगदानकर्ता तथा 21वीं सदी के एक नेतृत्वकर्ता के रूप में इसकी भूमिका को सुदृढ़ भी बनाएगा।

धन्यवाद।